# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

**After studying this chapter, the learners will**

- **understand a few basic concepts relating to employment such as economic activity, worker, workforce and unemployment**
- **understand the nature of participation of men and women in various economic activities in various sectors**
- **know the nature and extent of unemployment**
- **assess the initiatives taken by the government in generating employment opportunities in various sectors and regions.**

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप

•रोजगार विषयक मूल अवधारणाओं को समझंगे, जो आर्थिक गतिविधियों, मजदूर, श्रमशक्ति और बेरोजगारी से संबंधित हैं;

• विभिन्न क्षेत्रकों की आर्थिक गतिविधियों में पुरुषों और महिलाओं की भागीदारी के स्वरूप से परिचत होंगे;

• बेरोजगारी के स्वरूप और विस्तार को जान पाएँगे और

• देश के विभिन्न भागों और क्षेत्रकों में रोजगार के अवसरों का सृजन करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का मूल्यांकन करने योग्य हो पायंगे।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INTRODUCTION

**People do a variety of work. Some work on farms, in factories, banks, shops and many other workplaces; yet a few others work at home. Work at home includes not only traditional work like weaving, lace making or variety of handicrafts but also modern jobs like programming work in the IT industry. Earlier factory work meant working in factories located in cities whereas now technology has enabled people to produce those factory-based goods at home in villages.**

## परिचय

लोग तरह-तरह के काम करते हैं। कुछ लोग खेतों, कारखानों बैकों, दुकानों आदि अनेक प्रकार के कार्यस्थलों पर काम करते हैं व कुछ व्यक्ति घर पर भी अन्य काम करते हैं। घर पर होने वाले काम अब बुनाई, व गीते बनाना या हस्तकलाओं जैसे पारंपरिक कामों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि इनमें सूचना-प्रौद्योगिकी उद्योग के प्रोग्रम बनाने जैसे आधुनिक काम भी शामिल हो चुके हैं । पहले कारखाने में काम करने का अर्थ किसी शहर में स्थित कमर्शाला में काम करना होता था, किंतु अब तो प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों ने गॉव के घर में ही औद्योगिक उत्पादन संभव बना दिया है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INTRODUCTION

**Why do people work? Work plays an important role in our lives as individuals and as members of society. People work for 'earning' a living. Some people get, or have, money by inheriting it, not working for it. This does not completely satisfy anybody. Being employed in work gives us a sense of self-worth and enables us to relate ourselves meaningfully with others. Every working person is actively contributing to national income and hence, the development of the country by engaging in various economic activities — that is the real meaning of 'earning' a living. We do not work only**

## परिचय

व्यक्ति कार्य क्यों करते हैं? कार्य की हमारे व्यक्तिगत आरै सामाजिक जीवन में एक महत्त्वपर्ण् भूमिका है। लोग आजीविका के लिए कार्य करते हैं। कुछ लोगों को उत्तराधिकार के माध्यम से, कार्य किए बिना भी, धन मिल जाता है। किंतु, एसे धन से किसी को पूर्ण संतोष नहीं होता। किसी कार्य से जुड़ा रहना, हमें अपनी सार्थकता की अनुभूति प्रदान करता है – इसी के माध्यम से हम अन्य व्यक्तियों से सही अर्थों में संपर्क स्थापित करते हैं। प्रत्यक कार्यरत व्यक्ति सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आय में योगदान करता है। इसी के माध्यम से वह विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में भाग लेकर देश के आर्थिक

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INTRODUCTION

**for ourselves; we also have a sense of accomplishment when we work to meet the requirements of those who are dependent on us. Having recognised the importance of work, Mahatma Gandhi insisted upon education and training through a variety of works including craft.**

## परिचय

विकास में हिस्सदोर बनता है । यही सही अथां में आजीविका उपार्जन है । हम केवल अपने लिए काम नहीं करते; अपने ऊपर निर्भ व्यक्तियों की आवश्यकताओं कों पूरा करने के लिए कायं करके भी उपलब्धि का अनभुव करते हैं कायं के इसी महत्त्व को समझ कर महात्मा गाधँी ने शिक्षा और हस्तकलाओं सहित विभिन्न प्रकार के कामों के माध्यम से प्रशिक्षण पर बल दिया था।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INTRODUCTION

**Studying about working people gives us insights into the quality and nature of employment in a country and helps in understanding and planning our human resources. It helps us to analyse the contribution made by different industries and sectors towards national income. It also helps us to address many social issues such as exploitation of marginalised sections of the society, child labour, etc.**

## परिचय

कार्य कर रहे यक्तियों के अध्ययन से हमें देश में रोजगार की प्रकृति और गणवत्ता के विषय में एक गहरी अतंदृष्टि प्राप्त होती है। इससे हमें अपने मानवीय ससांधनों को जानने और उनके उपयुक्त प्रयोग की योजनाएँ बनाने में भी सहायता मिलती है । इससे विभिन्न उद्योगों तथा क्षेत्र को के राष्टीय आय में योगदान का विश्लषेण करने में भी सहायता मिलती है । य समाज के सीमांत–वगों, बाल–श्रमिकों आदि के शोष्ठण की समस्याओं का निदान करने में भी सहायक सिद्ध होते हैं।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Workers and Employment

**What is employment? Who is a worker? When a farmer works on fields, he or she produces food grains and raw materials for industries. Cotton becomes cloth in textile mills and in power-looms. Lorries transport goods from one place to another. We know that the total money value of all such final goods and services produced in a country in a year is called its gross domestic product for that year. When we also consider what we pay for our imports and get from our exports we find that there is a net earning for the country which may be positive (if we have exported more in value terms than imported) or negative (if imports exceeded exports in value terms) or zero (if exports and imports were of the same value). When we add this earning (plus or minus) from foreign transactions, what we get is called the country's gross national product for that year.**

## श्रमिक और रोजगार

रोजगार क्या है? श्रमिक कौन होता है? जब एक किसान खेतों में काम करता है तो वह खाद्यान्न और उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादन करता है। कपास ही कपड़े के कारखानों और विद्युतकरघों में कपड़े का रूप धारण कर लेता है। गाडियाँ सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाती हैं। हम जानते हैं कि किसी देश में एक वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का कुल मौद्रिक मूल्य इसका 'सकल घरेलू उत्पाद' कहलाता है। हमें निर्यात के लिए मूल्य प्राप्त होता है और आयात का मूल्य चुकाना पड़ता है, इसमें हम देखते हैं कि देश का निवल अर्जन धनात्मक हो सकता है (यदि निर्यात का मूल्य आयात की अपेक्षा अधिक रहे) या ऋणात्मक हो सकता है (यदि आयात का मूल्य निर्यात की अपेक्षा अधिक रहे) या शून्य हो सकता है (यदि आयात और निर्यात के मूल्य समान हों)। हम प्राप्त अर्जनों का योग करते हैं (+ या –) तो हमें उस वर्ष के लिए देश का सकल घरेलू उत्पाद प्राप्त होता है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Workers and Employment

**Those activities which contribute to the gross national product are called economic activities. All those who are engaged in economic activities, in whatever capacity — high or low, are workers. Even if some of them temporarily abstain from work due to illness, injury or other physical disability, bad weather, festivals, social or religious functions, they are also workers. Workers also include all those who help the main workers in these activities. We generally think of only those who are paid by an employer for their work as workers. This is not so. Those who are self-employed are also workers.**

## श्रमिक और रोजगार

सकल राष्ट्रीय उत्पाद में योगदान देने वाले सभी क्रियाकलापों को हम आर्थिक क्रियाएँ कहते हैं। वे सभी व्यक्ति जो आर्थिक क्रियाओं से संलग्न होते हैं, श्रमिक कहलाते हैं, चाहे वे उच्च या निम्न किसी भी स्तर पर कार्य कर रहे हैं। यदि इनमें से कुछ लोग बीमारी, ज़ख्म होने आदि शारीरिक कष्टों, खराब मौसम, त्यौहार या सामाजिक-धार्मिक उत्सवों के कारण अस्थायी रूप से काम पर नहीं आ पाते, तो भी उन्हें श्रमिक ही माना जाता है। इन कामों में लगे मुख्य श्रमिकों की सहायता करने वालों को भी हम श्रमिक ही मानते हैं। आमतौर पर हम ऐसा सोचते हैं कि जिन्हें काम के बदले नियोक्ता द्वारा कुछ भुगतान किया जाता है, उन्हें श्रमिक कहा जाता है । पर ऐसा नही है जो व्यक्ति स्व-नियोजित होते हैं, वे भी श्रमिक ही होते हैं।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Workers and Employment

**The nature of employment in India is multifaceted. Some get employment throughout the year; some others get employed for only a few months in a year. Many workers do not get fair wages for their work. While estimating the number of workers, all those who are engaged in economic activities are included as employed. You might be interested in knowing the number of people actively engaged in various economic activities. During 2011-12, India had about a 473 million strong workforce. Since majority of our people reside in rural areas, the proportion of workforce residing there is higher.**

## श्रमिक और रोजगार

भारत में रोजगार की प्रकृति बहुमुखी है। कुछ लोगों को वर्ष भर रोजगार प्राप्त होता है, तो कुछ लोग वर्ष में कुछ महीने ही रोजगार पाते हैं। अधिकांश मजदूरों को अपने कार्य की उचित मजदूरी नहीं मिल पाती। वैसे श्रमिकों की संख्या का अनुमान लगाते समय जितने भी व्यक्ति आर्थिक कार्यों में लगे होते हैं, उन सबको रोजगार में लगे लोगों की श्रेणी में शामिल किया जाता है। आप विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में लगे व्यक्तियों की संख्याएँ जानने को उत्सुक होंगे। वर्ष 2011–12 में भारत की कुल श्रम–शक्ति का आकार लगभग 473 मिलियन आँका गया था। क्योंकि देश के अधिकांश लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं, इसीलिए ग्रामीण श्रमबल का अनपुात भी शहरी श्रमबल से कहीं अधिक है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Workers and Employment

**Rural workers constitute about three fourth of this 473 million. Men form the majority of workforce in India. About 70 per cent of the workers are men and the rest are women (men and women include child labourers in respective sexes). Women workers account for one-third of the rural workforce whereas in urban areas, they are just one-fifth of the workforce. Women carry out works like cooking, fetching water and fuelwood and participate in farm labour. They are not paid wages in cash or in the form of grains; at times they are not paid at all. For this reason, these women are not categorised as workers. Economists argue that these women should also be called workers. What do you think?**

## श्रमिक और रोजगार

इन 473 मिलियन श्रमिकों में तीन-चौथाईश्रमिक ग्रमीण हैं। भारत में श्रमशक्ति में पुरुषों की बहलुता हैं । श्रमबल में लगभग 70 प्रतिशत परुष तथा शेषे (इसमें महिला तथा पुरुष बाल श्रमिकों को भी शामिल किया गया है) महिलाएँ हैं। ग्रमीण क्षत्र में महिला श्रमिक कुल श्रमबल का एक तिहाई हैं, तो शहरों में केवल 20 प्रतिशत महिलाएँ ही श्रमबल में भागीदार पाई गई है महिलाएँ खाना बनाने, पानी लाने ईधन बीनने के साथ-साथ खेतों में भी काम करती हैं। उन्हें नकद या अनाज के रूप में मजदूरी नहीं मिलती-कितने ही मामलों में तो कुछ भी भुगतान नही किया जाता। इसी कारण इन महिलाओं को श्रमिक वर्ग में भी शामिल नही किया जाता। अथर्शास्त्रियों का आगह है कि इन महिलाओं को भी श्रमिक ही माना जाना चाहिए। आप क्या समझते हैं?

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Participation of People in Employment

**Worker-population ratio is an indicator which is used for analyzing the employment situation in the country. This ratio is useful in knowing the proportion of population that is actively contributing to the production of goods and services of a country. If the ratio is higher, it means that the engagement of people is greater; if the ratio for a country is medium, or low, it means that a very high proportion of its population is not involved directly in economic activities.**

## लोगों की रोजगार में भागीदारी

श्रमिक जनसंख्या अनुपात जिसका प्रयोग देश में रोजगार की स्थिति के विश्लेषण के लिए सूचक के रूप में किया जाता है, यह जानने में सहायक है कि जनसंख्या का कितना अनुपात वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में सक्रिय रूप से योगदान दे रहा है। यदि यह अनुपात अधिक है, तो इसका तात्पयं है जनता की काम में भागीदारी अधिक होगी। यदि यह अनुपात मध्यम या कम हो, तो इसका अर्थ होगा कि देश की जनसंख्या का बहुत अधिक अनुपात प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक क्रियाओं में संलग्न नहीं है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Participation of People in Employment

**You might have already studied, in lower classes, the meaning of the term 'population'. Population is defined as the total number of people who reside in a particular locality at a particular point of time. If you want to know the worker-population ratio for India, divide the total number of workers in India by the population in India and multiply it by 100, you will get the worker-population ratio for India.**

## लोगों की रोजगार में भागीदारी

आपने 'जनसंख्या' शब्द का अर्थ तो पिछली कक्षाओं में पढ़ लिया होगा। जनसंख्या शब्द का अभिप्राय किसी क्षेत्र विशेष में किसी समय विशेष पर रह रहे व्यक्तियों की कुल संख्या से है। यदि भारत के श्रमिक जनसंख्या अनुपात का आकलन करना चाहें, तो हमें भारत में कायं कर रहे सभी श्रमिकों की संख्या को देश की जनसंख्या से भाग कर उसे 100 से गुणा करना हागेा। इस प्रकार, हमें श्रमिक जनसख्ंया अनपुात ज्ञात हो जायगेा

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Participation of People in Employment

**If you look at Table 7.1, it shows the different levels of participation of people in economic activities. For every 100 persons, about 35 (by rounding off 34.7) are workers in India. In urban areas, the proportion is about 34, whereas in rural India, the ratio is about 35. Why is there such a difference? People in rural areas have limited resources to earn a higher income and participate more in the employment market. Many do not go to schools, colleges and other training institutions. Even if some go, they discontinue in the middle to join the workforce; whereas, in urban areas, a considerable section is able to study in various educational institutions. Urban people have a variety of employment opportunities. They look for the appropriate job to suit their qualifications and skills. In rural areas, people cannot stay at home as their economic condition may not allow them to do so.**

## लोगों की रोजगार में भागीदारी

सारणी 7.1 भारत में विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में लोगों की भागीदारी के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट कर रही है। भारत में प्रत्यक 100 व्यक्तियों में से लगभग 35 श्रमिक है। शहरी क्षेत्रों में यह अनुपात लगभग 34 है, जबकि ग्रामीण भारत में यह अनुपात लगभग 35 है। एसा अंतर क्यों है? ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च आय के अवसर सीमित हैं, इसी कारण रोजगार बाज़ार में उनकी भागीदारी अधिक है। अधिकांश व्यक्ति स्कूल, महाविद्यालय या किसी प्रशिक्षण संस्थान में नहीं जा पाते। यदि कुछ जाते भी हैं तो वे बीच में ही छोड़कर श्रमशक्ति में शामिल हो जाते हैं। शहरी क्षेत्रों में एक बड़ा भाग विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में अध्ययन कर सकने में सक्षम है। शहरी जनसमुदाय को रोजगार के भी विविधतापूर्ण अवसर सुलभ हो जाते हैं। वे अपनी शिक्षा और योग्यता के अनुरूप रोजगार की तलाश में रहते हैं। किंतु ग्रामीण क्षेत्र के लोग घर पर नहीं बैठ सकते, क्योंकि उनकी आर्थिक दशा उन्हें एसा नहीं करने देती।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Participation of People in Employment

**Compared to females, more males are found to be working. The difference in participation rates is very large in urban areas: for every 100 urban females, only about 14 are engaged in some economic activities. In rural areas, for every 100 rural women about 18 participate in the employment market. Why are women, in general, and urban women, in particular, not working? It is common to find that where men are able to earn high incomes, families discourage female members from taking up jobs.**

## लोगों की रोजगार में भागीदारी

शहरी आरै ग्रमीण, दोनों ही वर्गों में पुरुषों की श्रमशक्ति भागीदारी महिलाओं की तुलना में अधिक हौ शहरी क्षेत्रों में तो पुरुष आरै महिला भागीदारी का अंतर बहुत ही बड़ा है केवल 15 प्रतिशत शहरी महिलाएँ ही किसी आर्थिक कार्य में व्यस्त दिखाई दे रही है। किंतु, ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की रोजगार बाज़ार में भागीदारी 25 प्रतिशत आँकी गई। महिलाएँ सामान्य और विशेष रूप से शहरों में काम क्यों नहीं कर रही हैं? यह बात देखने में आई है कि जहां कहीं भी पुरुष पर्याप्त रूप से उच्च आय अजित करने में सफल रहते हैं, परिवार की महिलाओं को घर से बाहर रोजगार प्राप्त करने से प्रायः निरुत्साहित किया जाता है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Participation of People in Employment

**Going back to what has already been mentioned above, many household activities done by women are not recognised as productive work. This narrow definition of work leads to non-recognition of women's work and, therefore, to the underestimation of the number of women workers in the country. Think of the women actively engaged in many activities within the house and at family farms who are not paid for such work. As they certainly contribute to the maintenance of the household and farms, do you think that their number should be added to the number of women workers?**

## लोगों की रोजगार में भागीदारी

हमनें पहले भी कहा है कि महिलाओं द्वारा की जाने वाली घरेलू गतिविधियों को आर्थिक या उत्पादन कायं ही नहीं माना जाता। कायं या रोजगार की यह संकीर्ण परिभाषा देश में महिला–वर्ग की श्रमबल में भागीदारी को नहीं मानती तथा इसलिए देश में महिला श्रमिकों की सख्या को कम आकाँ जाता है जरा सोचकर देखिए, कि घर के भीतर और खेतों में महिलाएँ कितने एसे काम करती हैं, जिनका उन्हें कोई भुगतान नही किया जाता। चूकि वे परिवार तथा खेतों के रख–रखाव में निश्चित रूप से योगदान देती हैं, क्या आपको नहीं लगता की उनकी सख्या भी महिला श्रमिकों में सम्मिलित की जानी चाहिए?

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## EMPLOYMENT IN FIRMS, FACTORIES AND OFFICES

**In the course of economic development of a country, labour flows from agriculture and other related activities to industry and services. In this process, workers migrate from rural to urban areas. Eventually, at a much later stage, the industrial sector begins to lose its share of total employment as the service sector enters a period of rapid expansion. This shift can be understood by looking at the distribution of workers by industry. Generally, we divide all economic activities into eight different industrial divisions.**

## फर्मों, कारखानों तथा कार्यालयों में रोजगार

फर्मों, कारखानों तथा कार्यालयों में रोजगार देश के आर्थिक विकास क्रम में श्रमशक्ति का कृषि तथा अन्य संबंधित क्रियाकलापों से उद्योगों और सेवाओं की ओर प्रवाह होता है। इसी प्रक्रिया में मजदूर ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में प्रवसन करते हैं। धीरे–धीरे उद्योग भी सकल रोजगार में अपना अंश खोने लगते हैं, क्योंकि सेवा क्षेत्रक में बहुत तीव्र दर पर प्रसार होने लगता है। श्रमशक्ति के कार्यानुसार या उद्योगवार वितरण से रोजगार स्वरूप के य परिवर्तन सहज ही स्पष्ट हो जाते हैं । समान्यतया आथिर्क क्रियाओं को आठ विभिन्न औद्योगिक वगों में विभाजित करते हैं।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## EMPLOYMENT IN FIRMS, FACTORIES AND OFFICES

**They are (i) Agriculture (ii) Mining and Quarrying (iii) Manufacturing (iv) Electricity, Gas and Water Supply (v) Construction (vi) Trade (vii) Transport and Storage and (viii) Services. For simplicity, all the working persons engaged in these divisions can be clubbed into three major sectors viz., (a) primary sector which includes (i) , (b) secondary sector which includes (ii), (iii), (iv) and (v) and (c) service sector which includes divisions (vi), (vii) and (viii). Table 7.2 shows the distribution of working persons in different industries during the year 2017-18.**

## फर्मों, कारखानों तथा कार्यालयों में रोजगार

य हैं: (क) कृषि (ख) खनन और उत्खनन (ग) विनिर्माण (घ) विद्युत, गैस एवं जलापूर्ति (ङ) निर्माण कार्य (च) वाणिज्य (छ) परिवहन और भंडारण तथा (ज) सेवाएँ। सरलता के लिए सभी कार्यरत व्यक्तियों को तीन प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। य हैं: (1) प्राथमिक क्षेत्रक, जिसमें (क) तथा (ख) सम्मिलित है। (2) द्वितीयक क्षेत्रक जिसमें (ग) (घ) तथा (ङ) को शामिल किया जाता है। (3) इसे सेवा क्षेत्रक कहते हैं और इसमें शेष तीनों उपवर्ग (ग), (घ) तथा (ङ) को रखा जाता है। सारणी 7.2 में हम भारत में वर्ष 2017–18 में विभिन्न उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के विषय में जानकारी दे रहे हैं।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## EMPLOYMENT IN FIRMS, FACTORIES AND OFFICES

**Primary sector is the main source of employment for majority of workers in India. Secondary sector provides employment to only about 24 per cent of workforce. About 31 per cent of workers are in the service sector. Table 7.2 also shows that about 60 per cent of the workforce in rural India depends on agriculture, forestry and fishing. About 20 per cent of rural workers are working in manufacturing industries, construction and other industrial activities. Service sector provides employment to about 20 per cent of rural workers. Agriculture is not a major source of employment in urban areas where people are mainly engaged in the service sector. About 60 per cent of urban workers are in the service sector. The secondary sector gives employment to about one-third of urban workforce.**

## फर्मों, कारखानों तथा कार्यालयों में रोजगार

भारत में अधिकांश श्रमिकों के रोजगार का स्रोत प्राथमिक क्षेत्रक ही है। द्वितीयक क्षेत्रक केवल लगभग 24 प्रतिशत श्रमबल को नियोजित कर रहा हौ लगभग 31 प्रतिशत श्रमिक सेवा क्षेत्रक में सलंग्न है । सारणी 7.2 भी यह स्पष्ट कर रही है कि ग्रामीण भारत की लगभग 60 प्रतिशत श्रमशक्ति कृषि, वन आरै मत्स्य पर निभर्र हौ लगभग 20 प्रतिशत ग्रामीण श्रमिक ही विनिर्माण उद्योगों, निर्माण और अन्य क्षेत्रों में लगे हुए हैं। केवल 20 प्रतिशत ग्रामीण श्रमिकों को सेवा क्षेत्र से ही रोजगार मिलता है। किंतु, शहरी क्षेत्रकों में कृषि और खनन रोजगार के प्रमुख स्रोत नहीं हैं, जहां अधिकांश लोग सेवा क्षेत्रक में कायरत हैं। 60 प्रतिशत शहरी श्रमिक सेवा क्षेत्रक में हैं। लगभग एक-तिहाई शहरी श्रमिक द्वितीयक क्षेत्रक में नियोजित हैं।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## EMPLOYMENT IN FIRMS, FACTORIES AND OFFICES

**Though both men and women workers are concentrated in the primary sector, women workers' concentration is very high there. About 57 per cent of the female workforce is employed in the primary sector whereas less than half of males work in that sector. Men get opportunities in both secondary and service sectors.**

## फर्मों, कारखानों तथा कार्यालयों में रोजगार

यद्यपि प्राथमिक क्षेत्रक में पुरुष और महिला दोनों ही प्रकार के श्रमिक संकेंद्रित हैं, पर वहां महिलाओं का संकेंद्रण बहुत अधिक है। इस प्राथमिक क्षेत्रक में लगभग 57 प्रतिशत महिलाएँ कार्यरत हैं–जबकि इस क्षेत्र में काम कर रहे पुरुषों की संख्या आधे से कम है। पुरुषों को द्वितीयक और सेवा क्षेत्रक दोनों में ही रोजगार के अवसर प्राप्त हो जाते हैं।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GROWTH AND CHANGING STRUCTURE OF EMPLOYMENT

**In Chapters 2 and 3, you might have studied about the planning strategies in detail. Here we will look at two developmental indicators — growth of employment and GDP. Nearly seventy years of planned development have been aimed at expansion of the economy through increase in national output and employment.**

## संवृद्धि एवं परिवर्तनशील रोजगार संरचना

आपने अध्याय 2 और 3 में विस्तार से नियोजन–रणनीतियों के बारे में पढ़ा था। यहां हम केवल दो विकास सूचकों पर विचार करेंगे। य हैं, रोजगार संवृद्धि और सकल घरेलू उत्पाद। लगभग सत्तर वर्षों से चल रहे योजनाबद्ध विकास का ध्यय राष्ट्रीय उत्पाद और रोजगार में वृद्धि के माध्यम से अर्थव्यवस्था का प्रसार रहा है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GROWTH AND CHANGING STRUCTURE OF EMPLOYMENT

**During the period 1950–2010, Gross Domestic Product (GDP) of India grew positively and was higher than the employment growth. However, there was always fluctuation in the growth of GDP. During this period, employment grew at the rate of not more than 2 per cent.**

## संवृद्धि एवं परिवर्तनशील रोजगार संरचना

1960–2010 की अवधि में भारत में सकल घरेलू उत्पाद में सकारात्मक वृद्धि हुई है और यह सवृद्धि दर रोजगार वृद्धि दर से अधिक रही है। किंतु, सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर में कुछ उतार–चढ़ाव भी आते रहे हैं। पर इस अवधि में रोजगार की वृद्धि लगभग 2 प्रतिशत बनी रही।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GROWTH AND CHANGING STRUCTURE OF EMPLOYMENT

**Chart 7.3 also points at another disheartening development in the late 1990s: employment growth started declining and reached the level of growth that India had in the early stages of planning. During these years, we also find a widening gap between the growth of GDP and employment. This means that in the Indian economy, without generating employment, we have been able to produce more goods and services. Scholars refer to this phenomenon as jobless growth.**

## संवृद्धि एवं परिवर्तनशील रोजगार संरचना

चार्ट 7.3, 1990 के दशक के अंतिम वर्षों में एक अन्य चिंताजनक घटनाक्रम की ओर भी इंगित कर रहा है: रोजगार वृद्धि दर कम होकर उसी स्तर पर पहुँच गई, जहां से योजनाकाल के प्रारंभिक चरणों में थी। इन्हीं वर्षों के दौरान हम सकल घरेलू उत्पाद और रोजगार की वृद्धि दरों के बीच काफी बड़ा अंतर पाते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम भारतीय अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन के बिना ही अधिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने में समक्ष रहे हैं। इस परिघटना को विद्वान 'राजेगारहीन सवंृद्धि' का नाम दे रहे हैं ।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GROWTH AND CHANGING STRUCTURE OF EMPLOYMENT

**So far we have seen how employment has grown in comparison to GDP. Now it is necessary to know how the growth pattern of employment and GDP affected different sections of workforce. From this we will also be able to understand what types of employment are generated in our country.**

## संवृद्धि एवं परिवर्तनशील रोजगार संरचना

अभी तक हमने देखा कि रोजगार सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि की तुलना में किस तरह बढ़ा है। अब यह जानना भी आवश्यक है कि रोजगार और सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दरों के इन स्वरूपों ने विभिन्न वर्गों के श्रमबल पर किस प्रकार के प्रभाव डाले। इससे हम समझ पाएँगे कि हमारे देश में किस प्रकार के रोजगार अवसरों का सृजन हो रहा है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GROWTH AND CHANGING STRUCTURE OF EMPLOYMENT

**Let us look at two indicators that we have seen in the preceding sections — employment of people in various industries and their status. We know that India is an agrarian nation; a major section of population lives in rural areas and is dependent on agriculture as their main livelihood. Developmental strategies in many countries, including India, have aimed at reducing the proportion of people depending on agriculture.**

## संवृद्धि एवं परिवर्तनशील रोजगार संरचना

आइए, पिछले खंड में बताए गए दो सूचकों पर एक बार फिर से विचार करें। य सूचक हैं, विभिन्न उद्योगों में लोगो को मिले रोजगार तथा उनकी स्थितियाँ। हम जानते हैं कि भारत कृषि प्रधान देश है। जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग ग्रामीण क्षेत्रों में बसा है और यह अपनी मुख्य आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। भारत सहित अनेक देशों के विकास रणनीतियों का ध्यय कृषि पर निर्भर जनसंख्या के अनुपात को कम करना रहा है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GROWTH AND CHANGING STRUCTURE OF EMPLOYMENT

**Distribution of workforce by industrial sectors shows substantial shift from farm work to non-farm work (see Table 7.3). In 1972-73, about 74 per cent of workforce was engaged in primary sector and in 2011-12, this proportion has declined to about 50 per cent. Secondary and service sectors are showing promising future for the Indian workforce. You may notice that the shares of these sectors have increased from 11 to 24 per cent and 15 to 27 per cent, respectively.**

### संवृद्धि एवं परिवर्तनशील रोजगार संरचना

औद्योगिक क्षेत्रकों के आधार पर श्रमबल का वितरण यह दिखाता है कि श्रमबल कृषि कार्यों से हटकर गैर कृषि कार्यों की ओर बड़े पैमाने पर बढ़ रहा है (सारणी 7.3 देखें)। जहां 1972–73 में प्राथमिक क्षेत्रक में 74 प्रतिशत श्रम बल लगा था, वहीं 2011–12 में यह अनुपात घटकर 50 प्रतिशत रह गया है। द्वितीयक और सेवा क्षेत्रक भारत के श्रमबल के लिए आशावादी भविष्य का संकेत दे रहे हैं। आप देखेंगे कि इन क्षेत्रकों की हिस्सेदारी क्रमशः 11 से बढ़कर 24 और 15 से बढ़कर 27 प्रतिशत हो गई है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GROWTH AND CHANGING STRUCTURE OF EMPLOYMENT

**The distribution of workforce in different status indicates that over the last four decades (1972-2018), people have moved from self-employment and regular salaried employment to casual wage work. Yet self-employment continues to be the major employment provider. Look at the last column of table 7.3. How do you understand the stagnation of secondary sector and moderate rise in self-employment during 2011-18? Discuss in the class. Scholars call the process of moving from self-employment and regular salaried employment to casual wage work as actualization of workforce. This makes the workers highly vulnerable. How? Look at the case study of Ahmedabad in the preceding section.**

### संवृद्धि एवं परिवर्तनशील रोजगार संरचना

विभिन्न स्थितियों में श्रमबल के वितरण को देखें तो पिछले चार दशकों (1972–2018) में लोग स्वरोजगार और नियमित वेतन–रोजगार से हटकर अनियत श्रम की ओर बढ़ रहे हैं। फिर भी स्वरोजगार, रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत बना हुआ है। सारणी 7.3 के अंतिम कॉलम को देखें। वर्ष 2011–18 के दौरान माध्यमिक क्षेत्र में स्थिरता और स्वरोजगार में मध्यम वृद्धि से क्या समझते हैं? कक्षा में चर्चा करें। विशेषज्ञ स्वरोजगार तथा नियमित वेतन से अनियत श्रम रोजगार की ओर जाने की प्रक्रिया को श्रम बल के अनियतीकरण का नाम देते हैं। इससे मजदूरों की दशा बहुत नाजुक हो जाती है । यह कैसे हो रहा है बॉक्स 7.2 में वर्णित अहमदाबाद का विशेष अध्ययन देखें।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INFORMALISATION OF INDIAN WORKFORCE

**In the previous section we have found that the proportion of casual labourers has been increasing. One of the objectives of development planning in India, since India's independence, has been to provide decent livelihood to its people. It has been envisaged that the industrialisation strategy would bring surplus workers from agriculture to industry with better standard of living as in developed countries. We have seen in the preceding section, that even after 70 years of planned development, more than half of the Indian workforce depends on farming as the major source of livelihood**

## भारतीय श्रमबल का अनौपचारीकरण

पिछले खंड में हमने पाया कि श्रमबल में अनियत श्रमिकों का अनुपात निरंतर बढ़ रहा है। स्वतंत्रता के बाद से विकास योजनाओं का एक ध्यय जनसामान्य के लिए सम्मानपूर्ण आजीविका का प्रबंध सुनिश्चित करना भी बताया गया है। यह कहा गया था कि औद्योगीकरण की रणनीति कृषि से अतिरिक्त श्रमिकों को उद्योंगों में आकर्षित कर उन्हें विकसित देशों की भाँति उच्च जीवन स्तर सुलभ कराएगी। किंतु, हम यह पिछले अनुभाग में देख ही चकु है कि योजनाबद्ध विकास के सत्तर वर्षो बाद भी देश के श्रमबल के आधे से अधिक सदस्यों के लिए कृषि ही रोजी-रोटी का प्रमख़ साधन बनी हुई है ।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INFORMALISATION OF INDIAN WORKFORCE

**Economists argue that, over the years, the quality of employment has been deteriorating. Even after working for more than 10-20 years, why do some workers not get maternity benefit, provident fund, gratuity and pension? Why does a person working in the private sector get a lower salary as compared to another person doing the same work but in the public sector?**

## भारतीय श्रमबल का अनौपचारीकरण

अथर्शास्त्रियों का यह भी तर्क है कि अनेक वषों से रोजगार की गुणवत्ता में निरतंर ह्रास हो रहा है। आखिर 10–20 वषों तक काम कर चुके न जाने कितने ही श्रमिक मातृत्व लाभ, भविष्यनिधि, ग्रेच्यूटी और पेंशन आदि से वंचित क्यों रह जाते हैं। निजी क्षेत्रक में कायं करने वाला व्यक्ति सार्वजनिक क्षेत्रक में उसी काम को करने वाले से कम वेतन क्यों पाता है?

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INFORMALISATION OF INDIAN WORKFORCE

**You may find that a small section of Indian workforce is getting regular income. The government, through its labour laws, enable them to protect their rights in various ways. This section of the workforce forms trade unions, bargains with employers for better wages and other social security measures. Who are they? To know this we classify workforce into two categories: workers in formal and informal sectors, which are also referred to as organised and un-organised sectors. All the public sector establishments and those private sector establishments which employ 10 hired workers or more are called formal sector establishments and those who work in such establishments are formal sector workers.**

## भारतीय श्रमबल का अनौपचारीकरण

आपको यह भी जानकारी होनी चाहिए कि भारत के सकल श्रमबल के बहुत छोटे से वर्ग को ही नियमित आय मिल पा रही है। सरकार श्रम कानूनों के द्वारा उन्हें अपने अधिकारों की रक्षा करने में समर्थ बनाती है। यही वर्ग अपने श्रमिक संघों को गठित कर रोजगारदाताओं से बेहतर मजदूरी और अन्य सामाजिक सुरक्षा उपायों के लिए सौदेबाजी भी करता है । य कौन लोग हैं ? इसी प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हम श्रमबल को औपचारिक तथा अनौपचारिक वर्गो में विभाजित कर रहे हैं। इन्हीं को संगठित और असंगठित क्षेत्रक भी कहा जाता है। सभी सार्वजनिक क्षेत्रक प्रतिष्ठान तथा 10 या अधिक कर्मचारियों को रोजगार देने वाले निजी क्षेत्रक प्रतिष्ठान संगठित क्षेत्रक माने जाते हैं। इन प्रतिष्ठानों में काम करने वालों को संगठित क्षेत्रक के कर्मचारी कहा जाता है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INFORMALISATION OF INDIAN WORKFORCE

**All other enterprises and workers working in those enterprises form the informal sector. Thus, informal sector includes millions of farmers, agricultural labourers, owners of small enterprises and people working in those enterprises as also the self-employed who do not have any hired workers. It also includes all non-farm casual wage labourers who work for more than one employer such as construction workers and head-load workers. You may note that this is one of the ways of classifying workers. There could be other ways of classification as well. Discuss the possible ways in the class.**

## भारतीय श्रमबल का अनौपचारीकरण

अन्य सभी उद्यम और उनमें कार्यरत श्रमिक मिल कर अनौपचारिक क्षेत्रक की रचना करते हैं। इस प्रकार इस अनौपचारिक क्षेत्रक में करोडों किसान, कृषि श्रमिक, छोटे-छोटे काम-धंधे चलाने वाले और उनव कमर्चारी तथा सभी स्वनियोजित व्यक्ति, जिनके पास भाडे का श्रमिक नहीं है, सम्मिलित हैं । इसमें सभी गैर-कृषि दैनिक वेतनभोगी मजदूर जैसे विनिर्माण मजदूर तथा सिरपर बोझा ढोने वाले मजदूर जो एक से अधिक नियोक्ता के लिए कार्य करते हैं, उन्हें भी शामिल किया जाता है। आप देखेंगे कि यह श्रमिकों को वर्गीकृत करने का एक तरीका है। हालाँकि, वर्गीकरण के अन्य तरीके भी हो सकते हैं, कक्षा में संभावित तरीकों पर चर्चा करें।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INFORMALISATION OF INDIAN WORKFORCE

**Those who are working in the formal sector enjoy social security benefits. They earn more than those in the informal sector. Developmental planning envisaged that as the economy grows, more and more workers would become formal sector workers and the proportion of workers engaged in the informal sector would dwindle. But what has happened in India? Look at the following chart which gives the distribution of workforce in formal and informal sectors.**

## भारतीय श्रमबल का अनौपचारीकरण

सामाजिक सरुक्षा व्यवस्था वफे लाभ सगंठित क्षेत्राक वफे कमर्चारियों को मिलते हैं । इनकी कमाई भी असंगठित क्षेत्राक वफे कर्मचारियों से अधिक होती है। विकास योजनाओं में सै(ांतिक रूप से यह माना गया था कि जैसे–जैसे अर्थव्यवस्था विकसित होगी, अधिकाधिक श्रमिक औपचारिक क्षेत्राक में सम्मिलित होते जाएँगे और अनौपचारिक क्षेत्राक वफे श्रमिकों का अनुपात बहुत कम रह जाएगा। ¯कतु वास्तव में भारत में क्या हुआ? नीचे दिये गये आरेख को देखें जिसमें सगंठित तथा असंगठित क्षेत्राकों में श्रमबल का वितरण दर्शाया गया है ।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INFORMALISATION OF INDIAN WORKFORCE

**In Section 7.2, we learnt that in 2011-12 there were about 473 million workers in India. There are about 30 million workers in the formal sector. Can you estimate the percentage of people employed in the formal sectors in the country? About only six per cent (30/ 473×100)! Thus, the rest 94 per cent are in the informal sector. Out of 30 million formal sector workers, only 6 million, that is, only about 21 per cent (30/ 6×100) are women. In the informal sector, male workers account for 69 per cent of the workforce.**

## भारतीय श्रमबल का अनौपचारीकरण

खंड 7.2 में हमने जाना था कि भारत में सन् 2011–12 में 473 मिलियन श्रमिक थे। केवल 30 मिलियन श्रमिक ही औपचारिक क्षेत्रक में कायं कर रहे थे। क्या आप इनका प्रतिशत अनपुात आकलित कर पाएँगे? य मात्र 6 प्रतिशत हैं (30/473ञ 100)। दूसरे शब्दों में, देश के 94 प्रतिशत श्रमिक अनौपचारिक क्षेत्रक में काम कर रहे हैं। यही नहीं, औपचारिक क्षेत्रक के श्रमिकों में महिलाओं की संख्या केवल 6 मिलियन अर्थात् 20 प्रतिशत (30/6ञ100) मात्र है। आरेख 7.4 देखें। अनापैचारिक क्षत्रक में परुषों का अशं कुल श्रमबल का 69 प्रतिशत पाया गया है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## INFORMALISATION OF INDIAN WORKFORCE

**Since the late 1970s, many developing countries, including India, started paying attention to enterprises and workers in the informal sector as employment in the formal sector is not growing. Workers and enterprises in the informal sector do not get regular income; they do not have any protection or regulation from the government. Workers are dismissed without any compensation. Technology used in the informal sector enterprises is outdated; they also do not maintain any accounts. Workers of this sector live in slums and are squatters. Of late, owing to the efforts of the International Labour Organization (ILO), the Indian government has initiated the modernisation of informal sector enterprises and provision of social security measures to informal sector workers.**

## भारतीय श्रमबल का अनौपचारीकरण

1970 के दशक के अंत में भारत सहित अनेक विकासशील देशों ने पाया कि औपचारिक क्षेत्रक में रोजगार वृद्धि नहीं हो पा रही। इसीलिए उन्होंने अनौपचारिक क्षेत्रक पर ध्यान देना आरंभ किया। किंतु, अनौपचारिक क्षेत्रक के उद्यमों और उनके श्रमिकों की आय नियमित नहीं होती और उन्हें सरकार से भी किसी प्रकार का संरक्षण और नियमन नहीं मिल पाता। श्रमिकों को बिना क्षति पूर्ति के ही काम से निकाल दिया जाता है। अनौपचारिक क्षेत्रक उपक्रमों में प्रयुक्त प्रौद्योगिकी पुरानी हो चुकी है तथा य किसी प्रकार के लेखा–खाते भी नहीं रखते हैं । इस क्षेत्रक के श्रमिक प्राय: गंदी बस्तियों में तथा झुग्गियों में रहते हैं । कुछ समय से अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के प्रयासों के फलस्वरूप भारत सरकार ने अनौपचारिक क्षेत्र के आधुनिकीकरण और इस क्षेत्रक के कर्मचारियों के लिए सामाजिक सरुक्षा व्यवस्था का प्रावधान किया हौ

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## UNEMPLOYMENT

**You might have seen people looking for jobs in newspapers. Some look for a job through friends and relatives. In many cities, you might find people standing in some select areas looking for people to employ them for that day's work. Some go to factories and offices and give their bio-data and ask whether there is any vacancy in their factory or office.**

## बेरोजगारी

आपने समाचार–पत्रों में रोजगार की तलाश करते हुए व्यक्यिों को देखा होगा। कुछ लोग अपने मित्रों और सगे संबंधियों के माध्यम से रोजगार तलाशते हैं। कई शहरों में कुछ चुने हुए स्थानों पर एसे अनेक लोग खड़े दिखाई दे जाते हैं, जिन्हें उस दिन के लिए काम देने वाले की प्रतीक्षा रहती हौं कुछ लागे
दफ्तरों–कारखानों में अपना जीवन–वत्त सौंप कर वहां पता लगा रहे होते हैं कि क्या उनके योग्य कोई स्थान रिक्त है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## UNEMPLOYMENT

**Some go to employment exchanges and register themselves for vacancies notified through employment exchanges. NSSO defines unemployment as a situation in which all those who, owing to lack of work, are not working but either seek work through employment exchanges, intermediaries, friends or relatives or by making applications to prospective employers or express their willingness or availability for work under the prevailing condition of work and remunerations. There are a variety of ways by which an unemployed person is identified. Economists define unemployed person as one who is not able to get employment of even one hour in half a day.**

## बेरोजगारी

कुछ व्यक्ति रोजगार कार्यालयों में उनके माध्यम से अनुसूचित रिक्तियों के लिए अपने नाम पंजीकृत कराते हैं। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन ने बेरोजगारी को इस प्रकार परिभाषित किया है कि यह वह अवस्था है, जिसमें व्यक्ति काम के अभाव के कारण बिना काम के रह जाते हैं। वे कार्यरत व्यक्ति नहीं हैं, परंतु रोजगार कार्यालयों, मध्यस्थों, मित्रों, संबंधियों आदि के माध्यम से या संभावित रोजगारदाताओं को आवेदन देकर या वर्तमान परिस्थितियों और प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने की अपनी इच्छा प्रकट कर कार्य तलाशते हैं। किसी बेरोजगार व्यक्ति की पहचान विभिन्न तरीकों से की जाती है। अर्थशास्त्री उसे बेरोजगार कहते हैं, जो आधे दिन की अवधि में एक घंटे का रोजगार भी नहीं पा सकता।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## UNEMPLOYMENT

**There are three sources of data on unemployment : Reports of Census of India, National Sample Survey Office's Reports of Employment and Unemployment Situation, Annual Reports of Periodic Labour Force Survey, and Directorate General of Employment and Training Data of Registration with Employment Exchanges. Though they provide different estimates of unemployment, they do provide us with the attributes of the unemployed and the variety of unemployment prevailing in our country.**

## बेरोजगारी

भारत में बेरोजगारी के आँकड़ों के तीन स्रोत हैं; भारत की जनगणना रिपोर्ट, राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय की रोजगार और बेरोजगारी की अवस्था संबंधी रिपोर्ट **PLFS** की वार्षिक रिर्पोट तथा रोजगार और प्रशिक्षण महानिदेशालय के रोजगार कार्यालय में पंजीकृत आँकड़े। यद्यपि इन स्रोतों से बेरोजगारी के भिन्न-भिन्न अनुमान किए हैं, य हमें बेरोजगारी के लक्षणों तथा देश में प्रचलित बेरोजगारी के प्रकारों के विषय में जानकारियां उपलब्ध कराते हैं।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## UNEMPLOYMENT

**Do we have different types of unemployment in our economy? The situation described in the first paragraph of this section is called open unemployment. Economists call unemployment prevailing in Indian farms as disguised unemployment. What is disguised unemployment? Suppose a farmer has four acres of land and he actually needs only two workers and himself to carry out various operations on his farm in a year, but if he employs five workers and his family members such as his wife and children, this situation is known as disguised unemployment. One study conducted in the late 1950s showed about onethird of agriculture workers in India as disguisedly unemployed.**

## बेरोजगारी

क्या हमारी अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं? इस अनुच्छेद के प्रथम गद्यांश म 'वर्णित स्थिति का', खुली बरोजेगारी कहते हैं। भारत के कृषि में फैली बेरोजगारी को अर्थशास्त्री प्रच्छन्न बेरोजगारी कहते हैं। प्रच्छन्न बेरोजगारी क्या होती है? मान लीजिए कि किसी एक किसान के पास चार एकड का भूखंड है और उसे अपने खेत में विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को निष्पादित करने में दो श्रमिकों की आवश्यकता है, किंतु यदि वह अपने परिवार के पाँच सदस्यों (पत्नी, बच्चों आदि) को कृषि कायं में लगा ले तो यह स्थिति प्रच्छन्न बेरोजगारी के नाम से जानी जाती है। 1950 के दशक के अंत में किए गए एक अध्ययन के द्वारा भारत में एक तिहाई कृषि श्रमिकों को प्रच्छन्न रूप से बेरोजगार दिखाया गया था।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## UNEMPLOYMENT

**You may have noticed that many people migrate to an urban area, pick up a job and stay there for some time, but come back to their home villages as soon as the rainy season begins. Why do they do so? This is because work in agriculture is seasonal; there are no employment opportunities in the village for all months in the year. When there is no work to do on farms, people go to urban areas and look for jobs. This kind of unemployment is known as seasonal unemployment. This is also a common form of unemployment prevailing in India.**

## बेरोजगारी

आपने यह भी देखा होगा कि बड़ी संख्या में लोग शहरों की ओर प्रवसन करते हैं, वहां नौकरी करते हैं और सीमित अवधि तक वहां रहते हैं। पर, वर्षा ऋतु आरंभ होते ही वे अपने गाँव लौट आते हैं। वे एसा क्यों करते हैं? कारण यही है कि कृषि का कायं मौसमी होता है – वर्ष भर गाँव में रोजगार के अवसर नहीं होते हैं। जब खेत में काम नहीं होता है तो लोग शहर की ओर जाते हैं और काम खोजते हैं। एसी बेरोजगारी की अवस्था को मौसमी बेरोजगारी कहते हैं। भारत में बेरोजगारी का य प्रकार भी बहुत बड़े स्तर पर प्रचलित है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## UNEMPLOYMENT

**Though we have witnessed slow growth of employment, have you seen people being unemployed over a very long time? Scholars say that in India, people cannot remain completely unemployed for very long because their desperate economic condition would not allow them to be so. You will rather find them being forced to accept jobs that nobody else would do, unpleasant or even dangerous jobs in unclean, or unhealthy surroundings. The Central and State governments take many initiatives and generate employment to facilitate a decent living for low income families through various measures. These will be discussed in the following section.**

## बेरोजगारी

यद्यपि हमने देखा है कि रोजगार संवृद्धि दर बहुत धीमी रही है – पर क्या आपने लोगों को बहुत लंबे समय तक रोजगार से वंचित देखा है? विद्वानों का कहना है कि भारत में व्यक्ति बहतु लबं समय तक पणू्र्त: बरेाजेगार नही ंबठै रह पात,े क्योंकि उनकी आथिर्क दशा इतनी निराशाजनक होती है कि कोई भी काम स्वीकार करना पड जाता है । आप उन्हें एसे काम भी करते हुए देख सकते है जिन्हें कोई अन्य व्यक्ति नहीं कर सकता। इनमें बहतु ही असुविधाजनक, अस्वास्थ्यकर, अस्वच्छ तथा जोखिम भरे काय र्भी होते हैं। केंद्र तथा राज्य सरकारों ने निम्न आय परिवारों के बेहतर रहन–सहन के लिए विभिन्न रोजगार सृजित किए हैं और इसके लिए पहल की है। इस विषय में अगले परिच्छेद में चर्चा की जायगी।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GOVERNMENT AND EMPLOYMENT GENERATION

**You may recall about the Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act 2005. It promises 100 days of guaranteed wage employment to all rural households who volunteer to do unskilled manual work. This scheme is one of the many measures the government has implemented to generate employment for those who are in need of jobs in rural areas.**

## सरकार और रोजगार सृजन

हाल ही में, भारत की संसद ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 पारित किया है। यह देश के ग्रामीण परिवारों के सदस्यों को अकुशल श्रमिक के रूप में कार्य करने को 100 दिन का दिहाड़ी उपलब्ध कराने की गारंटी देता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जिन्हें नौकरी की आवश्यकता है, उनके लिए रोजगार के अवसरों का सृजन करने के लिए यह सरकार द्वारा संचालित अनेक उपायों में से एक है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GOVERNMENT AND EMPLOYMENT GENERATION

**Since Independence, the Union and State governments have played an important role in generating employment or creating opportunities for employment generation. Their efforts can be broadly categorised into two — direct and indirect. In the first category, as you have seen in the preceding section, the government employs people in various departments for administrative purposes. It also runs industries, hotels and transport companies, and hence, provides employment directly to workers. When the output of goods and services from government enterprises increases, then private enterprises which receive raw materials from government enterprises will also raise their output and hence increase the number of employment opportunities in the economy. For example, when a government owned steel company increases its output, it will result in direct increase in employment in that government company. Simultaneously, private companies, which purchase steel from it, will also increase their output and thus employment. This is the indirect generation of employment opportunities by the government initiatives in the economy.**

## सरकार और रोजगार सृजन

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से संघीय और राज्य सरकारें रोजगार सृजन हेतु अवसरों की रचना करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही हैं। इनके प्रयासों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है: प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष। जैसा कि आपने पिछले अनुभाग में पढ़ा कि प्रथम श्रेणी में सरकार अपने विभिन्न विभागों में प्रशासकीय कार्यों के लिए नियुक्तियां करती है। सरकार अनेक उद्योग, होटल, और परिवहन कंपनियां भी चला रही है। इन सबमें भी यह प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करती हैं। जब सरकारी उद्यमों में उत्पादन स्तर में वृद्धि होती है, तो उन उद्यमों को सामग्रियों की पूर्ति करने वाले निजी उद्यमों को भी अपना उत्पादन बढ़ाने का अवसर मिलता है। इससे भी अर्थव्यवस्था में नए रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। उदाहरण के लिए, एक सरकारी इस्पात मिल में उत्पादन वृद्धि से उस सरकारी कंपनी में रोजगार में प्रत्यक्ष वृद्धि होती है। साथ ही, उस इस्पात मिल को उत्पादनों की पूर्ति करने वाली और उससे इस्पात खरीदने वाली निजी कंपनियों को भी अपने-अपने उत्पादन और रोजगार बढ़ाने का अवसर मिल जाता है। यह सरकार द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से अर्थव्यवस्था में रोजगार के अवसरों का सृजन है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## GOVERNMENT AND EMPLOYMENT GENERATION

**In Chapter 4, you would have noticed that many programmes that the governments implement, aimed at alleviating poverty, are through employment generation. They are also known as employment generation programmes. All these programmes aim at providing not only employment but also services in areas such as primary health, primary education, rural drinking water, nutrition, assistance for people to buy income and employment generating assets, development of community assets by generating wage employment, construction of houses and sanitation, assistance for constructing houses, laying of rural roads, development of wastelands/ degraded lands.**

## सरकार और रोजगार सृजन

आपने अध्याय 4 में ध्यान दिया होगा कि सरकारों द्वारा गरीबी निवारण के लिए चलाए जा रहे अनेक कायंक्रमों का क्रियान्वयन भी रोजगार सृजन के माध्यम से ही होता है। उन्हें रोजगार सृजन कायंक्रम भी कहा जाता है। इस तरह के कायंक्रम केवल रोजगार ही उपलब्ध नहीं कराते, इनके सहारे प्राथमिक जनस्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा, ग्रमीण आवास, ग्रमीण जलापूर्ति, पोषण, लोगों की आय तथा रोजगार सृजन करने वाली परिसंपत्तियां खरीदने में सहायता, दिहाड़ी रोजगार के सृजन के माध्यम से सामुदायिक परिसपंत्तियों का विकास, गृह और स्वच्छता सुविधाओं का निर्माण, गृह-निर्माण के लिए सहायता, ग्रामीण सड़कों का निर्माण और बंजर भूमि आदि के विकास के कायं पूरे किए जाते हैं।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## CONCLUSION

**There has been a change in the structure of workforce in India. Newly emerging jobs are found mostly in the service sector. The expansion of the service sector and the advent of high technology now frequently permit a highly competitive existence for efficient small scale and often individual enterprises or specialist workers side by side with the multinationals. Outsourcing of work is becoming a common practice. It means that a big firm finds it profitable to close down some of its specialist departments (for example, legal or computer programming or customer service sections) and hand over a large number of small piecemeal jobs to very small enterprises or specialist individuals, sometimes situated even in other countries. The traditional notion of the modern factory or office, as a result, has been altering in such a manner that for many the home is becoming the workplace. All of this change has not gone in favour of the individual worker. The nature of employment has become more informal with only limited availability of social security measures to the workers.**

**In the last few decades, there has been rapid growth in the gross domestic product, but without simultaneous increase in employment opportunities. This has forced the government to take up initiatives in generating employment opportunities particularly in the rural areas.**

## निष्कर्ष

भारत की श्रमबल संरचना में परिवर्तन आ चुका है। सेवा क्षेत्रक में रोजगार के नय अवसरों का सृजन हो रहा है। सेवा क्षेत्रक का विस्तार तथा इसमें नयो प्रौद्योगिकी के प्रादुर्भाव का कारण अब निर्बाध रूप से लघु उद्योग तथा कुछ विशिष्ट उपक्रम तथा विशषेज्ञ श्रमिक ही बहरुाष्टीय कंपनियों से प्रतिस्पर्धा में टिक सकते हैं। कायं की आउटसोसिंग एक सामान्य बात हो गयो है। इसका तात्पयं यह है कि एक बड़ी फर्म के लिए यह लाभप्रद है कि वह अपने विशिष्ट विभागो (जैसे विधि, कप्यंटूर प्रागप्रेमिगं या ग्राहक सेवा-अनुभाग) को बंद कर छोटे उद्यमियों को बड़े पैमाने पर छोटे-छोटे रोजगार उपलब्ध कराए, जो कि दूसरे देशों में भी स्थित हो सकता है। आधुनिक कारखाने की परंपरागत अवधारणा इस प्रकार बदल रही है कि घर ही कायं-स्थलों में परिवर्तित हो रहे हैं। यह समस्त परिवर्तन व्यक्तिगत श्रमिक के पक्ष में नहीं हो रहा है। श्रमिकों को न्यूनतम सामाजिक सुरक्षा की उपलब्धता के कारण रोजगार का स्वरूप और अधिक अनौपचारिक हो गया है। इसके बावजूद, पिछले कुछ दशकों में सकल घरेलू उत्पाद में तीव्र वृद्धि हुई है। लेकिन, इसके साथ ही रोजगार के अवसरों का सृजन नहीं होने के कारण सरकार को विशेष, तौर से ग्रामीण क्षेत्रों में, रोजगार के अवसरों का सृजन करने के लिए बाध्य होना पड़ा है।

# EMPLOYMENT : GROWTH, INFORMALISATION AND OTHER ISSUES

## Recap

**Ø All those persons who are engaged in various economic activities and hence contribute to gross national product are workers.**

**Ø About two-fifth of the total population in the country is engaged in various economic activities.**

**Ø Men particularly rural men, form the major section of workforce in India.**

**Ø Majority of workers in India are self-employed. Casual wage labourers and regular salaried employees together account for less than half the proportion of India's workforce.**

**Ø About three-fifth of India's workforce depends on agriculture and other allied activities as the major source of livelihood.**

**Ø In recent years, the growth of employment has decelerated.**

**Ø During post-reform period, India has been witness to employment opportunities in the service sector. These new jobs are found mostly in the informal sector and the nature of jobs is also mostly casual.**

**Ø Government is the major formal sector employer in the country.**

**Ø Disguised unemployment is a common form of unemployment in rural India.**

**Ø There has been a change in the structure of the workforce in India.**

**Ø Through various schemes and policies, the government takes initiatives to generate employment directly and indirectly.**

## पुनरार्वन

क्र वैसे व्यक्ति जो आर्थिक क्रियाओं में संलग्न हैं और इस प्रकार सकल राष्ट्रीय उत्पादन में योगदान कर रहे हैं, उन्हें हम श्रमिक कहते हैं।

क्र देश की जनसंख्या के पाँच में से दो व्यक्ति विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में लगे हैं।

क्र मुख्यत: ग्रामीण पुरुष, देश के श्रमबल का सबसे बड़ा वर्ग हैं।

क्र भारत में अधिकांश श्रमिक स्वनियोजक हैं। अनियत दिहाड़ी मजदूर तथा नियमित वेतनभोगी कमर्चारी मिलकर भी भारत की समस्त श्रम शक्ति के अनपुात के आध स भी कम ही रह जाते हैं

क्र भारत के कुल श्रमबल का लगभग पाँच में से तीन श्रमिक कृषि और संबद्ध कायों से ही अपनी आजीविका प्राप्त करता है।

क्र हाल के कुछ वषों से रोजगार वृद्धि में शिथिलता आई है।

क्र सुधारोपरांत भारत में सेवा क्षेत्रक में नए रोजगार के अवसरों का उदय हुआ है। य नए रोजगार मुख्यत: अनौपचारिक क्षेत्र के ही अंतर्गत आते हैं तथा इनके कायं की प्रकृति अधिकांशत: अनियत है।

क्र सरकार देश में सबसे बड़ा औपचारिक क्षेत्रक नियोक्ता है।

क्र प्रच्छन्न बेरोजगारी ग्रामीण बेरोजगारी का आम प्रकार है।

क्र भारत की श्रमबल की संरचना में बड़ा परिवर्तन आया है।

क्र अपनी विभिन्न योजनाओं और नीतियों द्वारा सरकार प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में रोजगार सृजन के लिए प्रयास करती है।